PCSMANTRA.COM

बुद्ध की पावन धरोहरों (पिपराहवा अवशेष) का अरुणाचल प्रदेश दौरा: 31 अक्टूबर से तवांग में आगमन

समाचार-संदर्भ: 30 अक्टूबर 2026 की PIB विज्ञप्ति में भगवान बुद्ध की पावन धरोहरों (पिपराहवा अवशेष) के अरुणाचल प्रदेश प्रदर्शन (31 अक्टूबर-21 नवंबर 2026) की घोषणा हुई। प्रकाशन: 30 अक्टूबर 2026।
प्रिलिम्स: पिपराहवा (कपिलवस्तु), 1898 पेपे खुदाई, ASI खुदाई 1971-77, तवांग मठ, ल्हाबाब डूचेन, IBC।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों

17 नवंबर का अपडेट: नामसाई में अंतिम चरण

15 नवंबर की संस्कृति मंत्रालय/PIB विज्ञप्ति के अनुसार, शाक्यमुनि बुद्ध के पवित्र अवशेष 14 नवंबर 2026 को अरुणाचल प्रदेश के नामसाई स्थित Golden Pagoda (Kongmu Kham) पहुंचे। यहां सार्वजनिक दर्शन 14 से 20 नवंबर तक निर्धारित हैं। इसे तवांग और बोमडिला के बाद राज्य में प्रदर्शनी का तीसरा तथा अंतिम चरण बताया गया है।

तवांग में प्रदर्शनी 31 अक्टूबर से 7 नवंबर और बोमडिला में 8 से 13 नवंबर तक चली। PIB के अनुसार, तवांग में 31,000 से अधिक तथा बोमडिला में 35,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। दोनों स्थलों का कुल आंकड़ा 66,000 से अधिक है। इसे नामसाई का कुल या अंतिम राज्यव्यापी आंकड़ा न लिखें।

नामसाई में दो विशेष प्रदर्शनियां भी शुरू की गईं। International Buddhist Confederation की प्रदर्शनी पिपराहवा अवशेषों की खोज और विरासत पर है; राष्ट्रीय संग्रहालय की प्रदर्शनी बौद्ध कला, इतिहास और जीवित परंपराओं पर केंद्रित है। आयोजन संस्कृति मंत्रालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार, राष्ट्रीय संग्रहालय और IBC के सहयोग से हो रहा है।

PIB ने अवशेषों की राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली वापसी 21 नवंबर के लिए निर्धारित बताई है। यह नियोजित वापसी है, हो चुकी घटना नहीं। Golden Pagoda को विज्ञप्ति थेरवाद बौद्ध आस्था का महत्वपूर्ण केंद्र बताती है।

9 नवंबर 2026: नया अपडेट

9 नवंबर 2026 अपडेट: शाक्यमुनि बुद्ध के पवित्र अवशेष 8 नवंबर 2026 को तवांग से भारतीय वायु सेना के चिनूक हेलीकॉप्टर द्वारा बोमडिला के थुबचोग गात्सेल लिंग (TGL) मठ लाए गए, जहां 8 से 13 नवंबर 2026 तक सार्वजनिक दर्शन हो रहे हैं; पहले दिन लगभग 4,000 श्रद्धालु आए। प्रदर्शनी संस्कृति मंत्रालय, राष्ट्रीय संग्रहालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार और इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कॉन्फेडरेशन (IBC) के सहयोग से है। इसके बाद अवशेष नामसाई के स्वर्ण पैगोडा में 14 से 20 नवंबर 2026 तक रहेंगे और 21 नवंबर 2026 को राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली लौटाए जाएंगे।

स्रोत: PIB, संस्कृति मंत्रालय, 9 नवंबर 2026 (2334253)

संस्कृति मंत्रालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार, इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कॉन्फेडरेशन (IBC) और राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली) मिलकर 31 अक्टूबर से 21 नवंबर 2026 तक अरुणाचल प्रदेश में भगवान बुद्ध की पावन धरोहरों (पिपराहवा अवशेष) का प्रदर्शन आयोजित कर रहे हैं। PIB की 30 अक्टूबर 2026 की विज्ञप्ति के अनुसार केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत 31 अक्टूबर को तवांग के गादेन नामग्याल ल्हात्से (तवांग मठ) में आगमन और उद्घाटन समारोह में भाग लेंगे।

घोषित कार्यक्रम-क्रम इस प्रकार है: 1-7 नवंबर तवांग मठ में जन-दर्शन; 8-13 नवंबर बोमदिला के TGL मठ (लोअर गोम्पा); 14-20 नवंबर नमसाई का गोल्डन पैगोडा; और 21 नवंबर को नमसाई-तेजू होते हुए धरोहरों की राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली वापसी। 1 नवंबर को संबद्ध प्रदर्शनी का उद्घाटन होगा, जिसमें मुख्यमंत्री पेमा खांडू मुख्य अतिथि होंगे। यह आयोजन तिब्बती बौद्ध परंपरा के पर्व ल्हाबाब डूचेन (बुद्ध के देवलोक से अवतरण की स्मृति) के अवसर से जुड़ा है।

धरोहरों को विशेष वायुसेना विमान से पालम (दिल्ली) से बोरझार (गुवाहाटी) और आगे हेलीकॉप्टर से ले जाने की व्यवस्था रक्षा मंत्रालय और वायुसेना के समन्वय से की गई है। तीनों स्थलों पर पिपराहवा धरोहर की खोज और प्रत्यर्पण (repatriation) पर आधारित प्रदर्शनी भी लगेगी, और “Buddhism: Dissemination in the Himalayan Region and Beyond” विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होगा, जिसमें भारत समेत सात देशों के भिक्षु, विद्वान और प्रतिनिधि शामिल होंगे।

10 नवंबर 2026: बोमडिला प्रदर्शनी की भागीदारी

संस्कृति मंत्रालय की 10 नवंबर विज्ञप्ति के अनुसार बोमडिला के थुबचोग गात्सेल लिंग (TGL) मठ में प्रदर्शनी के पहले दो दिनों में 11,969 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। यह दो दिनों का संचयी आँकड़ा है, केवल 10 नवंबर की दैनिक उपस्थिति नहीं।

विज्ञप्ति ने बोमडिला में 13 नवंबर तक दर्शन, 14-20 नवंबर को नमसाई के गोल्डन पैगोडा में अगले चरण और 21 नवंबर को राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली वापसी के निर्धारित क्रम की पुष्टि दोहराई। आगामी चरणों को 10 नवंबर तक पूरा हुआ न मानें।

स्रोत: PIB, संस्कृति मंत्रालय, 10 नवंबर 2026 (2334558)

मुख्य तथ्य (प्रिलिम्स)

पिपराहवा की खोज: पिपराहवा (सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश) प्राचीन कपिलवस्तु और शाक्य परंपरा से जुड़ा स्थल है। 1898 में विलियम क्लैक्स्टन पेपे ने यहाँ खुदाई की, जिसमें स्मारक-पात्र (reliquary), अस्थि-अवशेष और रत्न मिले।

ASI की खुदाई: 1971-77 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने के. एम. श्रीवास्तव के नेतृत्व में खुदाई की, जिसमें गहरे स्तर से दो और धातु-पात्र मिले।

कार्यक्रम-सारणी: 31 अक्टूबर तवांग आगमन और उद्घाटन; तवांग 1-7 नवंबर; बोमदिला (TGL मठ, लोअर गोम्पा) 8-13 नवंबर; नमसाई (गोल्डन पैगोडा) 14-20 नवंबर; 21 नवंबर दिल्ली वापसी।

सहयोगी संस्थाएँ: संस्कृति मंत्रालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार, इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कॉन्फेडरेशन (IBC) और राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली)।

परीक्षा दृष्टिकोण

प्रिलिम्स: पिपराहवा का स्थान (सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश), 1898 में पेपे की खोज, 1971-77 ASI खुदाई (के. एम. श्रीवास्तव), तवांग/बोमदिला/नमसाई स्थल और तारीखें, गादेन नामग्याल ल्हात्से मठ, ल्हाबाब डूचेन पर्व, IBC और राष्ट्रीय संग्रहालय की भूमिका।

मुख्य परीक्षा (GS-1): बौद्ध धरोहर और सांस्कृतिक कूटनीति, पिपराहवा-कपिलवस्तु का पुरातात्विक महत्व, धरोहर-प्रत्यर्पण की नीति, और पूर्वोत्तर के सांस्कृतिक मानचित्र में बौद्ध परंपरा पर प्रश्न संभव हैं।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

"बौद्ध धरोहरों का प्रदर्शन और प्रत्यर्पण भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के प्रभावी साधन बनते जा रहे हैं।" पिपराहवा अवशेषों के अरुणाचल प्रदेश प्रदर्शन के संदर्भ में बौद्ध धरोहर-कूटनीति के महत्व और उससे जुड़ी चुनौतियों की समीक्षा कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में लिखिए। 15 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: पिपराहवा अवशेषों के अरुणाचल प्रदेश प्रदर्शन (31 अक्टूबर-21 नवंबर 2026) का संक्षिप्त परिचय दीजिए — संस्कृति मंत्रालय, राज्य सरकार, IBC और राष्ट्रीय संग्रहालय का संयुक्त आयोजन।

मुख्य भाग में: महत्व — पूर्वोत्तर की जीवंत बौद्ध परंपरा से जुड़ाव, सात देशों के सम्मेलन ("Buddhism: Dissemination in the Himalayan Region and Beyond") से क्षेत्रीय सांस्कृतिक संवाद, धरोहर-प्रत्यर्पण से सॉफ्ट पावर में वृद्धि। चुनौतियाँ — अतिवेदनशील धरोहरों की सुरक्षा-संरक्षण और परिवहन (वायुसेना-समन्वित विशेष व्यवस्था), पिपराहवा-कपिलवस्तु पुरातात्विक दावों की प्रामाणिकता-समीक्षा, और भविष्य के प्रत्यर्पण के लिए सुदृढ़ तंत्र की आवश्यकता।

निष्कर्ष में: संरक्षण, प्रामाणिक अध्ययन और सांस्कृतिक कूटनीति के संतुलन से ही ऐसे आयोजन दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित में बदलते हैं — यह निष्कर्ष लिखिए।

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पिपराहवा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले में स्थित है
2. 1898 में विलियम क्लैक्स्टन पेपे ने यहाँ खुदाई की थी
3. 1971-77 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की खुदाई का नेतृत्व के. एम. श्रीवास्तव ने किया

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ **उत्तर और व्याख्या देखें**

उत्तर: (d) 1, 2 और 3। तीनों कथन सही हैं — पिपराहवा सिद्धार्थनगर (उत्तर प्रदेश) में है; 1898 में पेपे की खुदाई में स्मारक-पात्र, अस्थि-अवशेष और रत्न मिले; 1971-77 में ASI ने के. एम. श्रीवास्तव के नेतृत्व में खुदाई की, जिसमें गहरे स्तर से दो और धातु-पात्र मिले।

प्रश्न 2. पावन धरोहरों के अरुणाचल प्रदेश प्रदर्शन के कार्यक्रम-क्रम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जन-दर्शन की शुरुआत तवांग के गादेन नामग्याल ल्हात्से मठ से होगी
2. बोमदिला के TGL मठ (लोअर गोम्पा) और नमसाई के गोल्डन पैगोडा भी प्रदर्शन-स्थल हैं
3. धरोहरों का प्रदर्शन केवल तवांग तक ही सीमित रहेगा

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या देखें

उत्तर: (a) केवल 1 और 2। कथन 3 गलत है — घोषित कार्यक्रम-क्रम के अनुसार तवांग (1-7 नवंबर) के बाद बोमदिला (8-13 नवंबर) और नमसाई (14-20 नवंबर) भी प्रदर्शन-स्थल हैं; 21 नवंबर को धरोहरें नमसाई-तेज़ू होते हुए राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली लौटेंगी।

स्रोत

PIB विज्ञप्ति (30 अक्टूबर 2026): पिपराहवा अवशेषों का अरुणाचल प्रदेश प्रदर्शन, कार्यक्रम-क्रम और पृष्ठभूमि

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: अवशेष-प्रदर्शनी का कार्यक्रम-क्रम क्या है?

घोषित कार्यक्रम-क्रम इस प्रकार है: 1-7 नवंबर तवांग मठ में जन-दर्शन; 8-13 नवंबर बोमदिला के TGL मठ (लोअर गोम्पा); 14-20 नवंबर नमसाई का गोल्डन पैगोडा; और 21 नवंबर को नमसाई-तेज़ू होते हुए धरोहरों की राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली वापसी।

अभी अंतिम चरण कहां है?

15 नवंबर की PIB विज्ञप्ति के अनुसार नामसाई के Golden Pagoda में।

क्या अवशेष दिल्ली लौट चुके हैं?

17 नवंबर की स्थिति में ऐसा नहीं कहा जा सकता। PIB ने वापसी 21 नवंबर के लिए निर्धारित बताई है।

PCSMANTRA.COM

इस अद्यतन के स्रोत:

- www.pib.gov.in